

III. ॥ ५ [क्रीला] ॥ १॥ ११ ॥ २॥ ७ [सीरं च मे लयश्च मे सूश्च मे प्र-  
सूश्च मे] ॥ ३॥ ८ ॥ ४॥ २० ॥ ॥

IV. ॥ १ ॥ १॥ ६ [सुगं च मे शयनं] ॥ २॥ १० ॥ ३॥ १२ ॥ ४॥ २४ ॥ ॥

V. ॥ १३ [सीसं च मे त्रपु च मे श्यामं च मे लोहं च मे] ॥ १॥ १४ ॥ २॥  
१५ [यामश्च मऽइत्या] ॥ ३॥ २७ ॥ ॥

VI. ॥ १६-१८ ॥ १-३ ॥ ३० ॥ ॥

VII. ॥ १९-२३ [संवत्सरश्च मे तपश्च मेऽहो] ॥ १-५ ॥ ३५ ॥ ॥

VIII. ॥ २४-२७ ॥ १-४ ॥ ३९ ॥ ॥

IX. ॥ २८ - प्रजापतये स्वाहा ॥ १॥ इयं - त्याय ॥ २॥ २९ - आत्मा य-  
ज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन क-  
ल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वर्ग्यज्ञेन कल्पताम् ॥ ३॥ स्तोमश्च - वेद-  
स्वाहा ॥ ४॥ ४२ ॥ ॥ नवानुवाकेषु त्रयश्चत्वारिंशत् ॥

इति काण्वशाखायां संहितापाठे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

I. ॥ १८, ३० [साविषक्] ॥ १॥ ३१ ॥ २॥ ३२ [धनसाताऽइहावतु] ॥ ३॥  
३३ [वीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम्] ॥ ४॥ ३४ [विश्वा आ-  
शा वाजपतिर्भवेयम्] ॥ ५॥ ३५ ॥ ६॥ ३६, ३७ ॥ ७॥ ७॥ ॥

II. ॥ ३८ [ऋतापालुत] - ४९ [अहेलमानो] ॥ १-१२ ॥ ५० ॥ १३ ॥ २० ॥ ॥

III. ॥ ५१ [अग्निं युनग्मि - तेन गमेम -] ॥ १॥ ५२ [पक्षाऽअजरी पतत्रि-  
णो -] - ५७ ॥ २-७ ॥ २७ ॥ ॥

IV. ॥ ५८ ॥ १॥ ५९ [जानीथ] ॥ २॥ ६० [कृणावया] - ६५ ॥ ३-८ ॥  
६७b ॥ १॥ ३६ ॥ ॥

V. ॥ ६८ ॥ १॥ ६९ [जघंध (65.)] ॥ २॥ ७० ॥ ३॥ ७१ [ताल्हि] ॥ ४॥